सम्यक् आचार : सम्यक् विचार

अनुक्रमणिका

सम्यक् आचार

वन्दनायें— पृष्ठ ३ से १०

ओम्	३
ओम् ह्रीं श्रीं	४
पंच परमेष्ठी	४
अरहन्त	५
सिद्ध	५
भगवान महावीर	६
धर्म के तीन पात्र	६
गुरु	७–८
जिनवाणी	८–९
देव, गुरु, शास्त्र	१०

प्रथम खंड

संसार : और वह कैसे मिटे ? पृष्ठ १३ से २९

संसार, शरीर और भोग १३

संसार १३

शरीर १४

भोग १४

मिथ्यात्व १५ से १७

चार कषायें १७ से १९

लोभ १८

क्रोध १८

मान १९

माया १९

तीन मूढ़तायें २०

सम्यक् श्रद्धान में २५ दोष २० से २२

मिथ्यात्व का अभाव या सम्यक्त्व का उदय २२ से २९

शुद्धात्मा का ध्यान २५-२६

सोऽहं की अर्चना २७ से २९

द्वितीय खंड

आत्मा के तीन रूप; उनके लक्षण और कार्य-

पृष्ठ ३२ से १०६

आत्मा के तीन रूप ३२

परमात्मा ३३

अन्तरात्मा	३३
बहिरात्मा	३४
बहिरात्मा के कार्य	**३५ से ४१**
रागद्वेषयुक्त कुदेवों का पूजन	३५ से ३८
देवत्व से हीन अदेवों की अर्चना	३९ से ४१
असद्गुरुओं की सेवा	**४१ से ५७**
सद्गुरु के लक्षण	४१ से ४६
असद्गुरु के लक्षण	४६ से ५५
मिथ्या धर्म की उपासना	५६-५७
व्यर्थ की चर्चाओं में संलग्नता	**५८ से ६२**
नारी चर्चा	५९
राज्य चर्चा	५९
चौर्य चर्चा	६० से ६२
सप्त व्यसनों में रति	**६२ से ८०**
द्यूत क्रीड़ा	६३
मांस भक्षण	६३ से ६५
मद्यपान	६५ से ६८
वेश्यागमन	६८
आखेट	६८ से ७३
चौर्य कर्म	७३ से ७६
परस्त्री–रमण	७६ से ८०
अष्ट मदों में आसक्ति	**८० से ८४**
चार कषायों में प्रवृत्ति	**८४ से ९२**

लोभ	८५-८६
मान	८६ से ८९
माया	८९ से ९१
क्रोध	९२
अंतरात्मा के कार्य	९३ से १०३
धर्मध्यान की साधना	९३ से ९७
धर्मध्यान के ४ भेद	९७
पदस्थ ध्यान	९८ से १००
पिण्डस्थ ध्यान	१००–१०१
रूपस्थ ध्यान	१०१–१०२
रूपातीत ध्यान	१०३
देव गुरु और शास्त्र या सम्यग्दर्शन में अटूट श्रद्धा	१०४ से १०६

तृतीय खंड

अटूट श्रद्धावान किन्तु साधनाओं से हीन	१०९ से २००
गृहस्थाश्रमी अव्रत सम्यग्दृष्टि और उसके कर्तव्य	१०९
अव्रत सम्यग्दृष्टि	१०९–११०
स्थूल किन्तु ज्ञानमय १८ क्रियाओं का पालन	१११ से ११३
अव्रत सम्यग्दृष्टि के कर्तव्य	१११ से ११३
प्रगाढ़ सम्यग्दर्शन की ओर प्रवृत्ति	११३ से १२४
मोक्षपथ का आधार सम्यग्दर्शन	११३ से १२४
अष्ट मूलगुणों का पालन	१२४ से १२९
पंच उदम्बर	१२४–१२५
तीन मकार	१२६ से १२९

शुद्धात्मा का मनन और पाखंडियों में अश्रद्धा	१२९ से १३६
ज्ञान और आचरण का अभ्यास	१३७ से १३९
सत्पात्रों को विवेकपूर्ण दान	१४० से १६०
उत्तम पात्र—निर्ग्रंथ साधु	१४०--१४१
मध्यम पात्र—व्रती सम्यग्दृष्टि	१४२--१४३
जघन्य पात्र—अव्रत सम्यग्दृष्टि	१४४--१४५
पात्र–दान का फल	१४५ से १४९
कुपात्र	१४९
कुपात्रदान का फल	१५०
पात्रता और कुपात्रता में भेद	१५० से १५७
मिथ्यादृष्टियों का दान	१५८ से १६०
रात्रिभोजन त्याग	१६० से १६३
छने हुए जल का पान	१६४ से १६५
अशुद्ध कर्मों को छोड़कर, सम्यक् षटकर्मों का नियम से पालन	१६५ से २००
अशुद्ध षट्कर्म	१६६ से १७१
सम्यग्षट्कर्म—	१७२ से १८२
सम्यग्देव पूजा	१७२ से १८२
गुरु उपासना	१८२ से १८४
स्वाध्याय	१८५ से १९७
संयम	१९७–१९८
तप	१९८
दान	१९९--२००

चतुर्थ खंड

परम श्रद्धालु और कठोर साधनाओं में रत व्रती सम्यग्दृष्टि के विचार और उसके कर्तव्य २०३ से २३६

ग्यारह प्रतिमाओं का उत्तरोत्तर पालन २०३ से २३२

ग्यारह प्रतिमायें— २०४

दर्शन प्रतिमा २०५ से २१६

व्रत प्रतिमा २१६

सामायिक प्रतिमा २१७

प्रोषधोपवास प्रतिमा २१८ से २२१

सचित्त त्याग प्रतिमा २२१--२२२

अनुराग भुक्ति त्याग प्रतिमा २२३

ब्रह्मचर्य प्रतिमा २२४ से २२६

आरम्भ त्याग प्रतिमा २२७ से २२९

परिग्रह त्याग प्रतिमा २३०

अनुमति त्याग प्रतिमा २३०

उद्दिष्ट भोजन त्याग प्रतिमा २३१--२३२

पंच अणुव्रतों की निर्मलता में उत्तरोत्तर वृद्धि २३२ से ३६

अहिंसा २३३

सत्य २३३

अचौर्य २३४

ब्रह्मचर्य २३४–२३५

अपरिग्रह २३५–२३६

पंचम खंड

मुक्तिमार्ग के पथिक तपोपूत मुनि या साधुओं के कर्तव्य

पृष्ठ २३९ से २४७

त्रेपन क्रियाएँ व तेरह विध चारित्र का पालन २३९–२४०

मन वचन काय को रोक कर योगसाधना २४०

शुद्धात्म तत्व का निरूपण व चिन्तवन २४१ से २४७

आगम की वन्दना २४८

अभिवादन २४८

अन्तिम निवेदन २४८

अनुक्रमणिका

सम्यक् विचार

पंडित पूजा २ से १९

मालारोहण २० से ३७

कमल बत्तीसी ३९ से ५५